Question:- न्याय के अनुसार ईश्वर के अस्तित्व के लिए प्रमाण:

(Nyaya Arguments for the Existence of God) :

Answer:- ईश्वर के अस्तित्व को सिद्ध करने के लिए नैयायिकों ने कई युक्तियों का सहारा लिया है परन्तु उनमें से हम कुछ प्रमुख युक्तियों को यहाँ पर वर्णन करेंगे :

[1] कार्य-कारण नियम पर आधारित तर्क (Causal Proof) :— कार्य-कारण सिद्धान्त के अनुसार प्रत्येक घटना (कार्य) का एक कारण अवश्य ही होता है (Every event must have a cause)। प्रत्येक वस्तु कई अंशों के संयोग से बनती है। इसलिए मिश्रित या सावयव पदार्थों का कुछ कारण होता है। इन पदार्थों के भौतिक कारण तो परमाणु हैं। इन्हीं परमाणुओं के संयोग से ये पदार्थ बनते हैं।

अब प्रश्न है कि इन परमाणुओं को एकत्र (जमा) करके इन्हें सजा-संवारकर पदार्थों के रूप में संगठित करने वाला कौन है? यह सत्ता मनुष्य या विश्व का कोई अन्य जीव नहीं हो सकता, क्योंकि वे सब सीमित प्राणी हैं अतः यह सत्ता अवश्य ही असीम सत्ता

FEBRUARY 2016 15 MONDAY WK 08 (046-320)

WHILE THERE'S LIFE THERE'S HOPE

Scanned with CamScanner

16 FEBRUARY 2016 TUESDAY

होगी, वह असीम ईश्वर है। क्योंकि उसे ~~परमाणु~~ परमाणुओं और उनको संगठन करने का पूर्ण ज्ञान ईश्वर को ही है। ईश्वर सर्वज्ञ और सर्वशक्तिशाली है। इसलिए ईश्वर ही विश्व का निमित्त कारण (निर्माण-कर्ता) है। यह प्रमाण कारणता नियम पर आधारित है। यह विश्व को एक कार्य मानकर विश्व के कारण के रूप में ईश्वर का अस्तित्व सिद्ध करता है।

पाश्चात्य दार्शनिक Paul Janet तथा Lotze आदि ने इस सिद्धान्त को कार्य-कारण तर्क (Causal Arguments) कहते हैं। इन विद्वानों के अनुसार विश्व का कर्ता अवश्य ही एक बुद्धिमान तथा सर्वज्ञ सत्ता है और वह ईश्वर है।

2. अदृष्ट नियम पर आधारित तर्क :—
(Proof based on th Law Karista) :—

विश्व में कुछ लोग सुख-चैन की वंशी बजाते हैं तो कुछ लोग दुःख-दर्द की आहें भरते हैं। क्यों? इन सभी प्रश्नों का समाधान न्याय दर्शन कर्म-सिद्धान्त (Law of Karma) के आधार पर करता है। कर्म-सिद्धान्त के अनुसार व्यक्ति को अपने किये कर्मों का फल अनिवार्य रूप से भोगना पड़ता है। उसे युग युग कर्मों के लिए सुख और अशुभ

Scanned with CamScanner

कर्मों के लिए दुःख भोगना पड़ता है। शुभ कर्मों के फल हमें इसी जीवन में मिल जाते हैं और शुभ कर्मों के फल हमें अगले जीवन में मिलते हैं। दुःख-सुख हमारे अपने कर्मों के फल हैं। अदृष्ट हमारे वर्तमान सुखों तथा दुःखों को उत्पन्न करता है। अमुक अमुक कर्मों से उत्पन्न गुणों या पापों का समूह ही 'अदृष्ट' कहलाता है। इसी अदृष्ट-नियम के अनुसार व्यक्ति को सुख या दुःख मिलता है। अदृष्ट-नियम अचेतन होने के कारण स्वयं संचालित नहीं हो सकता। यह बिना किसी चेतन तथा सर्वज्ञ सत्ता के नियंत्रण के जीवों को उसके कर्मानुसार सुख या दुःख नहीं प्रदान कर सकता। इसलिए नैयायिकों ने ईश्वर को अदृष्ट-नियम के संचालक के रूप में मानना आवश्यक बतलाया है। इस प्रकार ईश्वर का अस्तित्व सिद्ध होता है। इस प्रमाण को नैतिक प्रमाण (Moral Proof) भी कहा जाता है।

3. वेदों की प्रमाणिकता पर आधारित तर्क (Argument based on the Authoritativeness of the Vedas) :

EXPERIENCE IS THE NAME EVERYONE GIVES TO THEIR MISTAKES.

Scanned with CamScanner

न्याय दर्शन आस्तिक (orthodox) दर्शन है। यह वेदों की प्रामाणिकता में विश्वास रखता है। वेदवाक्य सदैव सत्य होते हैं। प्रश्न है कि वेद इतने प्रामाणिक क्यों माने जाते हैं? यदि वेद मनुष्य द्वारा रचित मान लिया जाय तो वेद की पूर्ण प्रामाणिकता नहीं रह सकती। अतः वेद को निश्चय ही ईश्वरकृत मानना पड़ेगा और इसी कारण वेद को प्रामाणिक माना जाता है। इस प्रकार वेदों की प्रामाणिकता के आधार पर ईश्वर की सत्ता सिद्ध की गयी है।

4 श्रुतियों की मान्यता पर आधारित तर्क (Proof based on the Testimony of shruti)

श्रुतियां सुनी हुई होती हैं। इनमें अनेक स्थलों पर ईश्वर की सत्ता स्वीकार की गयी है। वेद देववाणी हैं और वे ईश्वर की सत्ता स्वीकार करते हैं, इसलिए ईश्वर का अस्तित्व सिद्ध होता है। यह प्रमाण अनुमान या तर्क पर आधारित नहीं है बल्कि यह तो एक शब्द ज्ञान है।

5 उदयनाचार्य द्वारा भी आठ तर्कों के आधार पर ईश्वर के अस्तित्व को सिद्ध किया है तर्कों का वर्णन यहाँ संभव नहीं है।

FEBRUARY 19

आलोचना :—
(Criticise)

न्याय के ईश्वर संबंधी प्रमाणों के विरुद्ध कई आक्षेप किये गये हैं उनमें से कुछ प्रमुख आक्षेप निम्नलिखित हैं :—

i न्याय के दो प्रमाणों [(a) ईश्वर वेदों की प्रामाणिकता का आधार है। और (b) ईश्वर का अस्तित्व वैदिक कथन पर आधारित है] में अन्योन्याश्रय दोष है।

नैयायिक इस आक्षेप को निराधार बतलाते हैं। किसी विषय का विचार दो दृष्टिकोणों से होता है :— 1. ज्ञान के दृष्टिकोण से और 2. अस्तित्व के दृष्टिकोण से।

अस्तित्व के दृष्टिकोण से ईश्वर ही प्रथम है जिसने वेदों को व्यक्त किया है और प्रामाणिकता प्रदान की है। परन्तु ज्ञान की दृष्टि से वेद ही प्रथम है क्योंकि इन्हीं के द्वारा हम ईश्वर का ज्ञान प्राप्त करते हैं। अतः यहाँ अन्योन्याश्रय दोष नहीं कहा जा सकता।

ii यदि ईश्वर इस विश्व का रचयिता है तो वह अवश्य ही शरीरी होगा। क्योंकि बिना शरीर के कोई कार्य नहीं हो सकता। इसका उत्तर न्याय दर्शन इस प्रकार देता है— यदि ईश्वर का अस्तित्व श्रुति द्वारा सिद्ध है तो फिर

A GOOD BEGINNING MAKES A GOOD ENDING

Scanned with CamScanner

उस पर आक्षेप लाना व्यर्थ है और यदि ईश्वर का अस्तित्व ही असिद्ध है तो भी इस पर आक्षेप लाना निरर्थक है। इस प्रकार ईश्वर के विरुद्ध आक्षेप नहीं किया जा सकता।

(iii) कभी-कभी आलोचक यह प्रश्न करते हैं — ईश्वर ने विश्व की रचना क्यों की? विश्व की रचना के पीछे ईश्वर का क्या प्रयोजन (purpose) है? नैयायिक इसका उत्तर इस प्रकार देते हैं :— ईश्वर पूर्ण (perfect) है। उसकी कोई भी इच्छा अतृप्त नहीं कही जा सकती। कारुण्यवश उसने विश्व की सृष्टि की है। सृष्टि में सुख-दुःख का होना स्वाभाविक है। ईश्वर उचित लक्ष्यों की सिद्धि में जीवों की मदद करता है।

Scanned with CamScanner